B.A Part 1 30 July पृ०सं०-4

रामायण का सांस्कृतिक महत्व

रामायण महाकाव्य ने भारतवर्ष की विचारधारा तथा साहित्य को ~~हजारों~~ वर्षों से अपने अनुसार परिवर्तित किया है। यह काव्य तथा आचारशास्त्र का समाहित रूप है। रामायण के पात्र आदर्शरूप से हैं- यथा- राम का आदर्श ~~न~~ नरश्रेष्ठ रूप, लक्ष्मण तथा भरत की भ्रातृभक्ति, सीता का पातिव्रत्य, रावण की ~~6~~ दुर्भावना ~~आ~~ इत्यादि।

रामायण काव्य होने के कारण कान्तासम्मित उपदेश से युक्त है।

"रामादिवत् वर्तितव्यं न रावणादिवत्।"

रामायण में पितृभक्ति, पुत्रप्रेम आदि मानवीय गुणों का तथा सत्य, धर्म, सदाचार, कर्तव्यनिष्ठा आदि सामान्य गुणों की विशद विवेचना हुई है। अन्याय पर न्याय की जीत का प्रतिपादन रामायण का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। वाल्मीकि ने नायक के रूप में राम का चित्रण किया है। राम के महत्व का प्रतिपादन ~~न~~ इसप्रकार से उन्होंने किया है-

"यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते॥" (रामा० 2।17।14)

राम के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का विशद निरूपण किया गया है। राम के इन गुणों से प्रभावित होकर ही भारत में तथा विदेशों में भी रामकथा का वृहत् रूप से प्रसार हुआ।

इसप्रकार से वाल्मीकीय रामायण भारत के सकलसाहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपजीव्य ग्रन्थ है।

धार्मिक दृष्टि से रामायण, महाभारत की अपेक्षा अधिक महत्व को धारण करता है। स्कन्दपुराण के उत्तरखण्ड ~~के~~ पाँच अध्यायों में रामायण का धार्मिक महत्व वर्णित है।

"रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्। सर्वपापहरं पुण्यं सर्वदुःखनिबर्हणम्,
समस्तपुण्यफलदं सर्वयज्ञफलप्रदम्।"

(रामायणमाहात्म्य 5/63)